

# ऋग्वेद

मण्डल ७

सूक्त ४१

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Rigveda

Maṇḍala 7

Sukta 41

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ऋषि वशिष्ठ हमारा ध्यान हमारी प्रातः काल की गतिविधियों की ओर ले गए हैं। सूर्योदय से पूर्व ही आलस्य त्यागकर, शौच स्नानादि से निवृत्त हो हमें तुरन्त अपने धर्मानुकूल कर्तव्यों के पालन में जुट जाना चाहिए। सुबह से ही हम ईश्वर का ध्यान लगा, नम्र बन, मन में अच्छे विचार रखें। हमारे कर्मों का उद्देश्य अपने लिए और समाज के किए उत्तम धनों की प्राप्ति होना चाहिए।

Synopsis

This composition directs our attention to our morning routine and the desirable attitude as we prepare for our day. Shedding all laziness, one should wake up before dawn and after ablutions, quickly get engaged in a righteous behavior with positive mental attitude and humility. The goal of our activities should be to earn righteous wealth that can sustain and nourish us and the society as a whole as well.

वशिष्ठः ऋषिः

देवता:	
१	लिङ्गोक्त
२ - ६	भगः
७	उषा:

छन्दः	
१	निचृज्जगती
२, ३, ५, ७	निचृत्त्रिष्टुप्
४	पङ्क्तिश्
६	त्रिष्टुप्

स्वरः	
१	निषादः
२-३, ५-७	धैवतः
४	पञ्चमः

Vaśiṣṭhaḥ ṛishiḥ

Devataaḥ	
1	liṅgokta
2 - 6	bhagaḥ
7	uṣhaaḥ

Chhandaḥ		
	1	nichṛijjagatee
	2, 3, 5, 7	nichṛittriṣṭup
	4	pañktish
	6	triṣṭup

Svaraḥ	
1	niṣhaadaḥ
2-3, 5-7	dhaivataḥ
4	pañchamaḥ

प्रातर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्रं॑ हवामहे प्रा॒तर्मित्रा॑ वरुणा प्रा॒तर॒श्विना॑ ।

प्रा॒तर्भगं॑ पू॒षणं॑ ब्रह्म॑णस्पतिं प्रा॒तः सोमं॑मु॒त रु॒द्रं हु॒वेम ॥१॥

ऋग् ७:४१:१

प्रातः अ॒ग्निम् प्रातः इन्द्रं॑ हवामहे प्रातः मि॒त्रावरु॑णा प्रातः अ॒श्विना॑ ।

प्रातः भगं॑ पू॒षणम् ब्रह्म॑णः पतिं॑ प्रातः इति॑ सोमं॑ उ॒त रु॒द्रम् हु॒वेम् ॥

(प्रातः) प्रातः समय अपने दिन का आरम्भ करते हुए हम अपने (भगं) शौर्य व उत्तम कर्म करने के लिए (अ॒ग्निम्) पावक अग्नि, (इन्द्रं) वर्षा, (मित्रा) प्राणदायक वायु, (वरुणा) जल, (अ॒श्विना॑) सूर्य और चन्द्रमा एवम् (पू॒षणम्) हमारे पोषण के लिए प्रदत्त (सोमं) वनस्पतियों की ऊर्जाओं का (हवामहे) आह्वान करते हैं। और हम (इति) उस (ब्रह्मणः) जगत के (पतिं) स्वामी का (हु॒वेम्) गुणगान करते हैं (उ॒त) जो (रु॒द्रम्) दुःखों और दुष्टों का नाशक है ।

1. Om praatar-agnim praatar-indraṇ havaamahe  
praatar-mitraa varuṇaa praatar-ashvinaa  
praatar-bhagam pooṣhaṇam brahmaṇas-patim  
praataḥ somam-uta rudraṇ huvema

Rig 7:41:1

(praatar) At dawn, as we begin the day, (bhagam) for our grandeur and glory (havaamahe) we meditate and invite the energies from (agnim) the holy fire, the great purifier, (indraṇ) the rain and thinder, (mitraa) vital air, (varuṇaa) the waters, (ashvinaa) sun and moon and the (somam) herbs, created for our (pooṣhaṇam) nourishment and vitality; and (huvema) we praise the (patim) Supreme Lord (brahmaṇas) of the universe (uta) who is (rudraṇ) the lord of justice and tormentor of evil and ailment.

प्रा॒तर्जितं॑ भग॑मु॒ग्रं हु॒वेम व॒यं पु॒त्रमदि॑ते॒र्यो वि॒ध॒र्ता ।

आ॒ध्रश्चि॑द्यं म॒न्य॑मानस्तुर॒श्चि॒द्राजा॑ चि॒द्यं भगं॑ भ॒क्षी॒त्याह॑ ॥२॥

ऋग् ७:४१:२

प्रातः जितं॑ भगं॑ उ॒ग्रम् हु॒वेम् व॒यम् पु॒त्रम् अदि॑तेः यः वि॒ध॒र्ता ।

आ॒ध्रः चि॒त् यम् म॒न्य॑मानः तुरः चि॒त् राजा॑ चि॒त् यम् भगं॑ भ॒क्षि॒ इति॑ आह॑ ॥

(प्रातः) प्रातः समय अपने दिन का आरम्भ करते हुए हम (भगम्) कल्याणकारी परन्तु (उग्रम्) दुष्टों को भयभीत करने वाले, (अदितेः) नाशरहित, (विधर्ता) ब्रह्माण्ड हो धारण करने वाले ईश्वर का (हुवेम्) गुणगान करते हैं (जितम्) जिसकी न्याय व्यवस्था सदैव विजयी रहती है। (यः) उसी (राजा) प्रकाशवान ईश्वर की (पुत्रम्) सन्तान (वयम्) हम, उसे (आध्रः) सब ओर से अपने (चित्) मन में (मन्यमानः) धारण किए हुए, उसके (आह) उपदेशों का पालन कर अपने (चित्) मन को (यम्) काबू में रखते हुए, (तुरः) बिना विलम्ब (भगम्) उत्तम कर्म करते हुए (इति) उसकी (भक्ति) उपासना करें।

2. Om praatar-jitam bhagam-ugraṇ huvema  
vayam putram-aditer-vo vi-dhartaa  
aadhrash-chid-yam manyamaanas-turash-chid-  
raajaa chid-yam bhagam bhakṣhe-ety-aaha

Rig 7:41:2

(praatar) At dawn, as we begin the day (vayam) we (huvema) praise God who is (aditer) indestructible, (bhagam) benevolent, (raajaa) luminous, (ugraṇ) tormentor of the evil, (vi-dhartaa) the sustainer of the Universe and (jitam) whose justice always prevails. We, (yo) his (putram) children (bhakṣhe) worship (ety) him and follow his (aaha) commandments by (yam) controlling our (chid) mind, by (manyamaanas chid) meditating on him from (aadhrash) all directions and by performing (bhagam) noble deeds (turash) without any delay.

भग॑ प्रणे॑त॒र्भग॑ सत्य॑राधो॒ भगे॑मां धिय॑मुद॒वा॒दद॑न्नः ।

भग॑ प्र णो॑ जनय॒ गोभि॑रश्चै॒र्भग॑ प्र नृभि॑र्नृ॒वन्तः॑ स्याम ॥ ३ ॥

ऋग् ७:४१:३

भग॑ प्रणे॑तरिति॒ प्र॒ऽनेतः॑ भग॑ सत्य॑राधः भग॑ इ॒माम् धिय॑म् उ॒त् अ॒व दद॑त् नः ।

भग॑ प्र नः॑ ज॒नय॒ गोभिः॑ अ॒श्वैः भग॑ प्र नृ॒भिः नृ॒वन्तः॑ स्या॒म ॥

हे (भग॑) सर्व ऐश्वर्य युक्त (प्र॒ऽनेतः॑) गणनायक, (सत्य॑राधः) पूजनीय सत्यरूप ईश्वर! (नः॑) हमें (इ॒माम्) उत्तम (धिय॑म्) बुद्धि (दद॑त्) देकर हमारी (उ॒त् अ॒व) रक्षा कीजिए। हे (भग॑) कल्याणकारी ईश्वर! (नः॑) हमारे लिए (प्र) सब ओर से (गोभिः॑) गौ (अ॒श्वैः) अश्वादि धनों को

(जनय) उत्पन्न कीजिए। जो (प्र) सबसे (भग) उत्तम मनुष्य हैं वह हमारे (नृभिः) नायक बनें और हम सब (नृवन्तः) उत्तम व्यवहार वाले (स्याम) बनें।

3. Om bhaga praṇetar bhaga satya-raadhō  
bhag-emaan dhiyam-ud-avaa-dadan-nah  
bhaga pra ṇo janaya gobhir-ashvair-bhaga  
pra nṛi-bhir-nṛi-vantaḥ syaama

Rig 7:41:3

(bhaga) O Possessor of all wealth! (praṇetar) O Leader of masses! O (raadhō) Embodiment of (satya) Truth! Please (ud avaa) protect (nah) us by (dadān) granting us the (emaan) best (dhiyam) intellect, thoughts and emotions. Please (janaya) produce the righteous wealth including (gobhir) cows and (ashvair) horses for (ṇo) us from (pra) all directions. May the (pra) best amongst us (nṛi bhir) lead us so that all of us (syaama) realize our (nṛi vantaḥ) best potentials!

उ॒तेदा॑नीं भ॒गव॑न्तः स्या॒मो॒त प्र॑पि॒त्व उ॒त म॒ध्ये अ॒ह्ना॑म् ।

उ॒तोदि॑ता म॒घव॑न्त॒सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वानां॑ सु॒म॒तौ स्या॑म ॥ ४ ॥

ऋग् ७:४१:४

उ॒त इ॒दानी॑म् भ॒गव॑न्तः स्या॒म उ॒त प्र॑पि॒त्वे उ॒त म॒ध्ये अ॒ह्ना॑म् ।

उ॒त उ॒त्त॒इ॒ता म॒घव॑न्त॒सूर्य॑स्य व॒यम् दे॒वाना॑म् सु॒म॒तौ स्या॑म ॥

हे (मघवन्) जगदीश्वर! (सूर्यस्य) सूर्य के (उत्त॒इ॒ता) उदय का (इ॒दानी॑म्) यह समय, (अ॒ह्ना॑म्) दिन के (म॒ध्ये) बीच का समय (उ॒त) और सायंकाल, सभी समय हमारे लिए (प्र॑पि॒त्वे) उत्तम ऐश्वर्य की प्राप्ति के समय (स्या॒म) हों। (व॒यम्) हम (भ॒गव॑न्तः) कल्याणकारी कर्म करने वाले (स्या॒म) हो (उ॒त) और (दे॒वाना॑म्) विद्वानों में भी (सु॒म॒तौ) श्रेष्ठ मती स्थिर हो।

4. Om ut-edaaneem bhaga-vantaḥ syaam-ota  
pra-pitva uta madhye ahnaam  
ut-oditaa magha-vant-sooryasya vayan  
devaanaan su-matau syaama

Rig 7:41:4

O (magha vant) Supreme Lord! (edaaneem) This time of the (oditaa) rising (sooryasya) Sun, the time during the (madhye) middle of the (ahnaam) day and the time near the evening, may all of these time be the time of (pra pitva)

obtaining righteous wealth for us. May (vayan) we (syaam) perform (bhaga vantaḥ) noble deeds all the time (uta) and may the (devaanaam) scholars amongst us (syaama) foster (su) best (matau) intellectual ideas.

भग ए॒व भग॑वाँ अस्तु दे॒वास्तेन॑ व॒यं भग॑वन्तः स्याम ।

तं त्वा॑ भग॒ सर्व॑ इज्जो॑हवीति॒ स नो॑ भग पुर॒एता भ॑वे॒ह ॥ ५ ॥ ऋग् ७:४१:५

भगः ए॒व भग॑वान् अस्तु दे॒वाः तेन॑ व॒यम् भग॑वन्तः स्याम ।

तम् त्वा॑ भग॒ सर्वः॑ इत् जो॒हवीति॑ सः नः भग॒ पुरः॑एता भ॒व इ॒ह ॥

वह (भगः) कल्याणकारी ऐश्वर्य युक्त ईश्वर (एव) ही (भगवान्) भगवान् (अस्तु) है । (तेन) उसी ईश्वर का पूजन करते हुए (वयम्) हम (देवाः) विद्वान् व (भगवन्तः) ऐश्वर्यवान् (स्याम) बनें । हममें से (तम्) जो (सर्वः) सदैव (त्वा) आपके (भग) ऐश्वर्य को समझ कर (इत्) उसकी (जोहवीति) प्रशंसा करता है (सः) वह और (भग) आप ही (इह) यहाँ (नः) हमारे (पुरःएता) मार्गदर्शक (भव) बनें ।

5. Om bhaga eva bhaga-vaam astu  
devas-tena vayam bhaga-vantaḥ syaama  
tam tvaa bhaga sarva ij-johaveeti  
sa no bhaga pura-etaa bhaveha

Rig 7:41:5

God, (bhaga) The possessor of all of the great wealth (astu) is our (bhaga vaam) well wisher (eva) indeed. May (vayam) we worship (tena) that God and (syaama) become (vantaḥ) possessor of (devas) great knowledge and (bhaga) wealth. Amongst us (tam) whosoever understands and (sarva) always (johaveeti) praises (tvaa) your (bhaga) wealth, may (sa) that person along with the (bhaga) God (bhaveha) become (no) our (pura-etaa) guide onto the righteous path.

सम॑ध्व॒रायोष॑सो॒ नमन्त॑ दधि॒क्रावे॑व शुच॑ये प॒दाय॑ ।

अ॒र्वाची॑नं व॒सुवि॑दं भग॑ नो रथ॑मिवाश्वा॑ व॒जिन॑ आ व॑हन्तु ॥ ६ ॥ ऋग् ७:४१:६

सम् अध्वराय उषसः नमन्त दधिक्रावाऽइव शुचये पदाय ।

अर्वाचीनम् वसुविदम् भगम् नः रथम्ऽइव अश्वाः वाजिनः आ वहन्तु ॥

(नः) हम (उषसः) उषा काल से पूर्व उठ (शुचये) पवित्र होकर, (अश्वाः) घोड़ों से जुते (रथम्ऽइव) रथ की भांति (वाजिनः) शीघ्रता से, (नमन्त) नमन का (सम्) भाव मन में लेकर, (पदाय) उत्तम पदार्थों को पाने के लिए, (अध्वराय) हिसारहित धार्मिक व्यवहार को (दधिक्रावाऽइव) धारण करें और (अर्वाचीनम्) नये (वसु) धनों और (विदम्) विद्याओं को प्राप्त करते हुए (आ) सब ओर से (भगम्) ऐश्वर्य व (वहन्तु) उन्नति प्राप्त करें।

**6. Om sam-adhvaraay-oṣhaso namanta  
dadhikraav-eva shuchaye padaaya  
arvaacheenam vasu-vidam bhagan no  
ratham-iva-ashvaa vaajina aa vahantu**

Rig 7:41:6

(no) We should get up before (oṣhaso) daybreak and after the (shuchaye) purification routine, (sam) with (namanta) humility and as (vaajina) swiftly (iva) as a (ratham) chariot driven by (ashvaa) horses, (dadhikraav) get engaged (eva) in (adhvaraay) righteous deeds for (padaaya) attaining the best wealth. May we (vahantu) attain (arvaacheenam) new (vasu) wealth, (vidam) knowledge and (bhagan) benevolence from (aa) all directions!

अश्वावतीगोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।

घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ ऋग् ७:४१:७

अश्वऽवतीः गोऽमतीः नः उषसः वीरऽवतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः ।

घृतम् दुहाना विश्वतः प्रऽपीताः यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

हे (अश्वऽवतीः) ऐश्वर्ययुक्त, (गोऽमतीः) करुणायुक्त, (उषसः) प्रभात किरणों के समान शोभायमान, (वीरऽवतीः) दृढ स्त्रियों! (विश्वतः) सब का (भद्राः) कल्याण और सब ओर से (प्रऽपीताः) उत्तमता लाने के लिए (नः) हमारे (सदम्) घरों को (घृतम्) पोषक पदार्थों से (दुहाना)

पूरा कर सबकी (पात) रक्षा करो । (यूयम्) तुम (सदा) सदा (नः) हम सभी के सुखों का ध्यान रख घरों में (स्वस्तिभिः) खुशहाली (उच्छन्तु) लाओं ।

7. Om ashvaa-vateer-go-mateer-na uṣhaaso  
veera-vateeh̐ sadam-uchchhantu bhadraah̐  
ghṛitan duhaanaa vishvataḥ pra-peetaa  
yooyam paata svastibhiḥ sadaa naḥ

R̥ig 7:41:7

O (ashvaa-vateer) benevolent, (go-mateer) empathetic, (veera-vateeh̐) brave and (uṣhaaso) radiant (like morning sun) ladies! May you (paata) protect (na) our (sadam) homes by (duhaanaa) providing complete (ghṛitan) nourishment to everyone and lead (vishvataḥ) everyone towards (bhadraah̐) wellness and (pra-peetaa) excellence. May (yooyam) you (sadaa) always care and (uchchhantu) bring (svastibhiḥ) happiness to (naḥ) our homes.